* S - 2 5 2 0 / 6 0 0 *

S-2520

M. A. (Part-I) (Sem. I) Examination

March / April - 2011

Hindi : Paper - I

(Core Course - 01)

(प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य)

Time : **3** Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. - Part - 1 (Sem. 1)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi - Paper - 1**

☛Subject Code No. : **2 5 2 0** ☛Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) **दाहिनी** ओर प्रश्न के अंक दिखाएँ गये हैं ।

१ हिन्दी सूफी काव्य परम्परा का विस्तार से वर्णन कीजिए। १८

अथवा

१ निर्गुण भक्तिधारा की विशेषताओं का सोदाहरण वर्णन कीजिए। १८

२ कबीर ने अपने काव्य में जिन सामाजिक परिस्थितियों से विद्रोह कर स्वस्थ मानव की प्रतिष्ठा की, उसकी विवेचना कीजिए । १७

अथवा

२ 'कबीरवाणी पीयूष' की पठित साखियों के आधार पर कबीर काव्य के विविध विषयों की चर्चा कीजिए। १७

३ ''जायसी का वियोग वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है।''–उद्धरण देते हुए इस कथन पर प्रकाश डालिए। १७

अथवा

३ '''पद्मावत' में इतिहास और कल्पना का सुभग समन्वय हुआ हैं।''–इस कथन की पुष्टि कीजिए। १७

४ (अ) टिप्पणी लिखिए : ९

(१) कबीर काव्य में 'सहन' की अवधारणा ।

अथवा

(१) कबीर के माया विषयक विचार ।

(२) 'पद्मावत' का काव्य सौष्ठव।

अथवा

(२) 'पद्मावत' में प्रकृतिचित्रण ।

(ब) ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : ९

(१) हमारे गुरू दीन्हीं अजब जरी।
कहा कहौं कछु कहत न आवै अंम्रित रसन भरी
याही तै मोहिं प्यारी लागी, लैके गुपुत धरी।
पाँचो नाग पचीसौं नांगिनि सूँघत तुरत मरी॥
डाइनि एक सकल जग खायौं सो भी देखि डरी।
कहै कबीर भया घट निरमल सकल बियाधि टरी॥

अथवा

(१) दुलहिनीं गावहु मंगलवर।
हम घरि आए राजा राम भरतार॥
तन रत करि मैं मन रति करिहौं पांचउ तत्त बराती।
रामदेव मौरे पाहुनैं आए मैं जोबन मै माती ॥
सरिर सरोवर बेदी करिहौ ब्रह्मा बेद उचारा।
रामदेव संगि भाँवरि लेह हौ धंनि धंनि भाग हमारा ॥
सुर तैंतीसौं कोटिक आए मुनिवर सहस अठासी।
कहे कबीर हम ब्याहि चले हैं पुरिख एक अंबिनासी॥

(२) रोइ गँवाए बारहमासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा॥
तिल तिल बरख बरख पर जाइ । पहर पहर जुग जुग न सेराइ ॥
सौ नहिं आवै रूप मुरारी। जासौं पाव सोहाग सुनारी ॥
सांझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कौनि सो धरी करै पिउ फोरा?
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा ॥
रक्त न रहा बिरह तन जरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा ।।
पाय लागि जौरे घनि हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु, नाथा ॥
बरस दिवस घनि रोइ कै, हारि परी चित्त झंखि ।
मानुस घर घर बूझि कै, बूझै निसरी पंखि॥

अथवा

(२) कुहुकि कुहुकि जस कोइल रोई। रक्त आँसु धुधची बन बोई॥
भई करमुखी नैन तन रती। को सेराव ? बिरहा दुख ताती॥
जहँ जहँ ठाढ़ि होइ बनबासी। तहँ तहँ होई धुँधुची कै रासी॥
बूँद बूँद महँ जानहुँ जीऊ। गुंजा गूँजि करै, पिउ पिउ ॥
तेहि दुखभए परास निपाते । लोहू बूड़ि उठे होइ राते ।।
राते बिंब भीजि तेहि लोहू । बखर पाक, फाटहिय गोहूँ॥
देखो जहाँ होइ सोइ राता। जहाँ सो रतन कहैं को बाता ?
नहिं पावस ओहि देसरा, नहिं हेवंत बसंत ।
ना कोकिल न पपीहरा, जेहि मुनि आवे कंत॥